प्रकाशन तिथि : 15 जनवरी, 2022
प्रेषण तिथि : 19 जनवरी, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 21 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'इतिहास केवल पुलकित होने के लिए नहीं, यह हम पर पूर्वजों का ऋण'

हम सबको पिछले लगभग पौने पांच सौ साल से गौरव दिलाने वाले जैताजी, कुंपाजी और अन्य सभी महान वीरों को मैं नमन करता हूं और आप सभी लोगों के हृदय की उस भावना को, जो इस कर्मस्थली, तपोस्थली पर आकर उन नर-पुंगवों के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए उमड़ रही है, मैं नमन करता हूं। हमने गिरी-सुमेल के इस युद्धक्षेत्र के इतिहास के बारे में बहुत कुछ सुना है, लेकिन इसमें से जो मुख्य बात है, जो विश्व विख्यात है, वह यह है कि यह एक ऐसा युद्ध था जिसमें बिना राजा के, बिना राजा की इच्छा के उनके कुछ सेनापतियों ने कर्त्तव्य की मांग पर युद्ध लड़ा और मात्र चौबीस घंटे की अवधि में शत्रु की 10 गुना बड़ी सेना को लोहे के चने चबवा दिए। ऐसा पूरे इतिहास में कहीं दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। हमारा उन वीरों को याद करने का कारण अलग-अलग हो सकता है। (शेष पृष्ठ 7 पर)

पू. तनसिंह जी की कृपा हमारी पूंजी, उसे हासिल करें

(श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के चतुर्थ स्थापना दिवस पर माननीय संघप्रमुख श्री संदेश।)

श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज सापेक्ष साधना है। व्यष्टि और परमेष्टि के बीच समष्टि का अस्तित्व है और संघ समष्टि को परमेष्टि का ही अभिव्यक्त स्वरूप मानता है और इसीलिए उसकी सेवा को परमेश्वर की सेवा मानता है। संघ अपने संपर्क में आने वाले के व्यक्तित्व को निखार कर उसे समष्टि के लिए उपयोगी बनाकर उसकी सेवा में संलग्न करता है। संघ के स्वयंसेवक विभिन्न प्रकार से इस कार्य में संलग्न हैं। ऐसे प्रयासों को संगठित करने के लिए प्रारंभ से ही विभिन्न प्रकार के प्रकोष्ठों आदि का गठन होता आया है। ऐसा ही एक प्रकोष्ठ 12 जनवरी 2019

को अस्तित्व में आया जिसका नाम रखा गया- श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन। इसका लक्ष्य रखा गया समाज की सात्विक व सकारात्मक युवा शक्ति से संपर्क बढ़ा कर उसे संगठित करना, संघ के संपर्क में लाकर उनके व्यक्तित्व को परिष्कृत करने का अवसर उपलब्ध करवाना और उस शक्ति को समाज व संसार के लिए अधिकतम उपयोगी बनाना। एक सुंदर प्रयास के सुंदर परिणाम भी आये और इसे पूरे समाज ने महसूस भी किया। अनेक सकारात्मक भाव वाले साथी जुड़े और संघ के निदेर्शानुसार उनकी ऊर्जा का समाज के श्री चरणों में अर्पण हुआ। आज हम सब संघ के इस आनुषंगिक संगठन का चतुर्थ स्थापना दिवस मना रहे हैं। यह स्थापना दिवस हम एक विशिष्ट पृष्ठभूमि में मना रहे हैं। अभी हाल ही में हमने पूज्य तनसिंह जी के संकल्प के विराट स्वरूप के दर्शन किए हैं। परमेश्वर की कृपा से पूरे संसार ने हमारे समाज की मूल सकारात्मक छवि के दर्शन किए हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आसपुर (डूंगरपुर) में हुआ बालिका शिविर का आयोजन

मेवाड़ वागड़ संभाग के डूंगरपुर प्रांत में आसपुर स्थित द स्टडी स्कूल में बालिकाओं का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 30 दिसंबर 2021 से 2 जनवरी 2022 तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन लक्ष्मी कंवर खारड़ा ने किया। उन्होंने बालिकाओं को संस्कार का महत्व समझाते हुए कहा कि जैसे हमारे संस्कार होते हैं, वैसा ही हमारा जीवन बनता है। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने शिविरों के माध्यम से हममें उन संस्कारों का निर्माण कर रहा है जो क्षत्रिय नारी में होने चाहिए। हम स्वयं संस्कारित होंगी तभी समाज को भी संस्कारित बनाने में सहयोगी बन सकेंगी। संघ मैं की नहीं, हम की बात करता है क्योंकि सामूहिकता संघ शिक्षण का मुख्य तत्व है। सामूहिकता के अभ्यास से ही व्यक्तिगत अहंकार को समाप्त करके समाज को एक सूत्र में बांधा जा सकता है। संघ की इस साधना का ही परिणाम हीरक जयन्ती समारोह के रूप में जयपुर में प्रकट हुआ जिसे देख कर हर कोई अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहा है। शिविर में प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, बाँसवाड़ा, राजसमंद, डूँगरपुर, उदयपुर जिलों की बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर के अंतिम दिन हीरक जयंती कार्यक्रम में डूँगरपुर प्रान्त के सहयोगियों का आभार प्रकटीकरण एवं स्नेह भोज कार्यक्रम भी आयोजित हुआ जिसमें संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा ने सभी सहयोगियों का आभार जताया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

देवीकोट (जैसलमेर) में सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर संपन्न

जैसलमेर संभाग में देवीकोट स्थित राणी रूपादे संस्थान के प्रांगण में श्री क्षत्रिय युवक संघ के सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। 27 दिसंबर 2021 से 2 जनवरी 2022 तक संपन्न शिविर में जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर और सीकर जिले के 100 से अधिक युवाओं ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का माध्यमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। केंद्रीय कार्यकारी एवं शिविर संचालक प्रेम सिंह रणधा ने शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कहा कि हम लोग जिस काम में प्रवृत्त हुए हैं वह काम अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक है। संघ में आने से पूर्व हम यह नहीं जानते थे कि हम कौन है, संघ ने हमारा अपने वास्तविक स्वरुप से परिचय कराया। हमें पता ही नहीं था कि हममें ऐसे महान पूर्वजों का शुद्ध रक्त है जिसे शुद्ध एवं पवित्र रखने के लिए न जाने कितने अचिंत्य बलिदान दिए गए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आसपुर (डूंगरपुर) में हुआ बालिका शिविर का आयोजन

(पेज एक से लगातार) हुए कहा कि हीरक जयन्ती कार्यक्रम ने पूरे देश के सामने अनुशासन एवं एकता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। आप सभी के सक्रिय सहयोग से ही यह सम्भव हो पाया है। संघ को सदैव समाज का सम्पूर्ण सहयोग मिलता रहा है और इसके लिए आप सब के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की 45वीं पुण्यतिथि मनाई

श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघ प्रमुख पूज्य श्री आयुवान सिंह जी हुडील की 45वीं पुण्यतिथि 7 जनवरी को मनाई गई। जोधपुर स्थित हनुवंत छात्रावास में श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मोड़ सिंह भेड़ ने पूज्य श्री आयुवान सिंह जी का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि किस प्रकार पूज्य आयुवान सिंह जी ने जीवन पर्यन्त संघर्ष करके राजपूत समाज में राजनीतिक जागृति लाने में अहम भूमिका निभाई। मोती सिंह फलसुंड ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन मोहन सिंह गंगासरा ने किया। फलोदी प्रान्त के बामणु में श्री नागणाराय शाखा में भी श्रद्धेय आयुवान सिंह जी की पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि कार्यक्रम रखा गया। मध्य गुजरात संभाग में साणंद तहसील के काणेटी गांव में अभिमन्यु शाखा में पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें काणेटी एवं साणंद के स्वयंसेवकों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। सूर्यदीप सिंह काणेटी ने पूज्य श्री आयुवान सिंह जी का परिचय प्रस्तुत किया।

नाथा जी जयंती पर रक्तदान व स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित

वीर शिरोमणी नाथा जी की जयंती के उपलक्ष में देश के विभिन्न हिस्सों में उनके वंशजों द्वारा प्रतिवर्ष कार्यक्रम रखे जाते हैं। इसी क्रम में इस वर्ष नाथाजी की 497वीं जयन्ती पर नाथा जी स्मृति संस्थान के तत्वावधान में भायंदर (पूर्व), मुंबई में रक्तदान व स्वास्थ्य जाँच शिविर आयोजित किया गया जिसमें श्री क्षत्रिय युवक संघ उत्तर मुंबई प्रांत, राजस्थान राजपूत परिषद, रामेश्वर हाउसिंग सोसायटी, जय श्री ओम हाउसिंग सोसाइटी व हैप्पी ग्रुप के कार्यकताओं ने रक्तदान किया। कार्यक्रम में कुल 67 यूनिट रक्तदान किया गया व 350 से अधिक लोगो की स्वास्थ जांच की गई। नाथा जी स्मृति संस्थान ने सभी रक्तदाताओं का आभार प्रकट किया।

ठाकुर उम्मेद सिंह धोली की तृतीय पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि

जौहर स्मृति संस्थान के संस्थापक एवं आजीवन अध्यक्ष रहे स्वर्गीय ठाकुर उमेद सिंह धोली की तृतीय पुण्यतिथि पर 30 दिसंबर 2021 को चित्तौड़गढ़ के गांधीनगर स्थित जौहरस्मृति संस्थान भवन में कार्यक्रम आयोजित कर श्रद्धांजलि दी गई। स्थानीय सांसद सी.पी. जोशी ने पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ठाकुर साहब को निर्भीक, स्पष्ट वक्ता और ध्येयनिष्ठ बताते हुए कहा कि उन्होंने ही जौहर स्मृति संस्थान को दुनिया भर में पहचान दिलाई। संस्थान के अध्यक्ष तख्त सिह फाचर ने बताया कि उनका जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायक है। त्याग की भावना उनमें अनुकरणीय थी। तेजपाल सिंह खोर ने ठाकुर साहब की जीवटता के संस्मरण सुनाए। प्रोफेसर लोकेंद्र सिंह ज्ञानगढ़ ने उम्मेद सिंह जी की साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। कान सिंह सुवावा, योगेंद्र सिंह धोली व कर्नल रणधीर सिंह बस्सी ने भी श्रद्धांजलि प्रकट की। नवीन सारथी, नंदकिशोर निर्झर, मुरली भट्ट, अमृतवाणी ने काव्यांजलि प्रस्तुत की। संस्थान के उपाध्यक्ष शक्ति सिंह मुरलिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। नरपत सिंह भाटी ने संचालन किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली भी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

'एक राजपूत किसान' लघु फिल्म को मिले 27 राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार

'एक राजपूत किसान' नामक लघु फिल्म, जो अजमेर जिले के भिनाय तहसील के सिंगावल गांव के प्रगतिशील किसान उम्मेद सिंह राठौड़ की कहानी पर आधारित है, ने एक वर्ष में 27 राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं। राजस्थान इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में प्रदर्शन के लिए भी इस लघु फिल्म का चयन किया गया है। उम्मेद सिंह राठौड़ पिछले 53 वर्षों से अनुसंधान आधारित कृषि कर रहे हैं और अन्य ग्रामीणों को भी इसका प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। वे मोतीलाल नेहरू किसान प्रशिक्षण संस्थान, प्रयागराज में भी प्रशिक्षण प्रदान कर चुके हैं। 1986 में उन्हें राज्य सरकार द्वारा जिले के सर्वश्रेष्ठ किसान के रूप में भी सम्मानित किया जा चुका है।

श्री राजपूत सेवा समिति, रानी के चुनाव सम्पन्न

9 जनवरी को श्री राजपूत सेवा समिति रानी की बैठक एवं चुनाव आशापुरा माताजी मंदिर प्रांगण नाडोल में संपन्न हुए। संस्थान के चुनाव अधिकारी जोध सिंह राठौड़ ने बताया कि कार्यकारणी के द्विवार्षिक चुनाव निर्विरोध सम्पन्न हुए जिसमें अध्यक्ष महावीर सिंह कुंपावत गुड़ा भीम सिंह, उपाध्यक्ष नारायण सिंह उदावत, सचिव जोर सिंह चौहान, कोषाध्यक्ष पर्वत सिंह भाटी कंटालिया निर्वाचित हुए। बैठक के दौरान समिति के सदस्यों का निर्वाचन तथा संरक्षक मंडल की भी नियुक्ति की गई। इस अवसर पर सेवा समिति द्वारा सम्मान समारोह के सफल आयोजन पर कार्यकारिणी का धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया गया एवं समिति द्वारा विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षिक कार्यों के द्वारा समाज में नई जागृति व उन्नति लाने का संकल्प व्यक्त किया गया।

कृतज्ञता प्रकटीकरण कार्यक्रमों का आयोजन

सायला

जोधपुर

हीरक जयंती समारोह के पश्चात श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा विभिन्न स्थानों पर कृतज्ञता प्रकटीकरण कार्यक्रमों के माध्यम से हीरक जयंती कार्यक्रम में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी समाज बंधुओं के प्रति आभार व कृतज्ञता व्यक्त की जा रही है। इसी क्रम में 29 दिसंबर को बीकानेर स्थित श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में भी बीकानेर जिला क्षेत्र के सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए बैठक का आयोजन किया गया। केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने कहा कि हीरक जयंती समारोह में जैसा अनुशासन प्रकट हुआ, वह बताता है कि अनुशासन के संस्कार हमारे भीतर सुप्त पड़े थे जो सामाजिक भाव के प्रवाह से जागृत हो उठे। इस अनुशासन को स्थायी बनाने का कार्य संघ की सामूहिक संस्कारमयी प्रणाली से ही सम्भव है। जोरावर सिंह भादला ने कहा कि संघ की 75 वर्ष की साधना का परिणाम हीरक जयन्ती पर हमको दिखाई दिया। कार्यक्रम में पूर्व प्रधान छैलू सिंह पुंदलसर, डीआईजी बीएसएफ पुष्पेंद्र सिंह राठौड़, बीकानेर बस ऑपरेटर यूनियन के अध्यक्ष समुंदर सिंह राठौड़, भंवर सिंह उदट, ओंकार सिंह मोरखाना, जुगल सिंह बेलासर व नवीन सिंह तंवर ने भी हीरक जयन्ती को लेकर अपने अनुभव बताए। संभाग प्रमुख रेवन्त सिंह जाखासर ने उपस्थित सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की तथा भविष्य में शिविरों व शाखाओं में भी सहयोग का आह्वान किया। बैठक का संचालन खींव सिंह सुल्ताना द्वारा किया गया। जोधपुर स्थित संभागीय कार्यालय तनायन में भी 9 जनवरी को स्नेहमिलन का आयोजन हुआ जिसमें हीरक जयंती कार्यक्रम के अनुभव, हीरक जयंती के पश्चात समाज की संघ से व संघ की समाज से आशाएं व अपेक्षाएं, लोकतंत्र में ज्यादा भागीदारी को सुनिश्चित करने के उपाय आदि बिंदुओं पर चर्चा की गई। केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हीरक जयन्ती में जिस प्रकार से समाज ने हमारा सहयोग किया है वह संघ के प्रति समाज के विश्वास को दिखाता है। लेकिन यह विश्वास अपनी कीमत मांगता है और वह कीमत हम त्याग और तपस्या से ही चुका सकते हैं। संभाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह\ देणोक, वयोवृद्ध स्वयंसेवक नारायण सिंह माणकलाव स्वयंसेवकों व सहयोगियों के साथ उपस्थित रहे। लाडनूं में 31 दिसंबर को लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत के सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए स्नेहमिलन रखा गया जिसमें संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा और प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल ने हीरक जयन्ती कार्यक्रम में सहयोग देने के लिए सभी के प्रति आभार प्रकट किया। महाराष्ट्र संभागप्रमुख नीर सिंह सिंघाणा भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जालोर संभाग में 2 जनवरी को सायला स्थित जलंधरनाथ राजपूत छात्रावास में आयोजित आभार प्रकटीकरण कार्यक्रम में संभागप्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने कहा कि आप सबके सहयोग से हीरक जयन्ती कार्यक्रम में हमारे समाज ने सम्पूर्ण देश में अनुशासन की मिसाल कायम की है। अब हमें इस अनुशासन को स्थायी बनाने के लिए गाँव-गाँव में संघ की शाखाएं व शिविर प्रारम्भ करने हैं। डॉ. उदय सिंह सोढा व एलआईसी अधिकारी केसर सिंह देवांदी ने सभी से संघ से जुड़ने का आह्वान किया। प्रांतप्रमुख नाहर सिंह जाखड़ी भी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सिरोही प्रान्त का आभार प्रकटीकरण कार्यक्रम 30 दिसंबर को सिरोही स्थित अतिथि इन होटल में आयोजित हुआ जिसमें संभागप्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने सभी सहयोगियों का आभार प्रकट किया। प्रांतप्रमुख ईश्वर सिंह सरण का खेड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। पाली शहर में स्थित वीर शिरोमणि दुगार्दास राठौड़ छात्रावास में पाली व रोहट मण्डल के सक्रिय स्वयंसेवक व सहयोगी वर्ग की बैठक भी 1 जनवरी को आयोजित हुई जिसमें प्रांतप्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम को वरिष्ठ स्वयंसेवक हीर सिंह लोड़ता, राजेंद्र सिंह डिंगाई, चेतन सिंह झाला, छात्रावास के पूर्व अध्यक्ष लुणसिह दुदिया, वीर शिरोमणि दुगार्दास शिक्षा समिति अध्यक्ष गुलाब सिंह गिरवर, डॉ. दलजीतसिंह चिमनपुरा, डॉ. आनंद सिंह, छात्रावास अधीक्षक मालम सिंह, जवान सिंह, कात्यायनी स्कूल नयागांव के निदेशक कल्याण सिंह ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाबसर की ओर से भेजी गयी यथार्थ गीता सभी को भेंट की गई। 2 जनवरी को सोजत रोड के समीप स्थित कालका माता जी मन्दिर केलवाद में सोजत मण्डल की बैठक रखी गई जिसमें बहादुर सिंह सारंगवास, नरपतसिंह सारंगवास, जैताजी संस्थान के अध्यक्ष भगवत सिंह बगड़ी नगर ने अपने विचार प्रकट किए। प्रांतप्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। यहाँ भी समाजबन्धुओं को यथार्थ गीता का वितरण किया गया। 2 जनवरी को ही मध्य गुजरात संभाग के काणेटी गाँव में स्नेहमिलन कार्यक्रम रखा गया जिसमें ध्रुव सिंह साणंद, जीटीपीएल गुजरात चैनल के कनकसिंह राणा, अहमदाबाद जिला परिषद के सदस्य जगदीशसिंह वाघेला, नवनियुक्त गुजरात युवा कांग्रेस के प्रमुख विश्वनाथ सिंह वाघेला सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे। राजपूत विकास संघ साणंद, राजपूत विद्यासभा अहमदाबाद, राजपूत युवा संघ, गुजरात राजपूत समाज खेडा, राजस्थान राजपूत युवा सेना अहमदाबाद, बावला-धोळका राजपूत समाज और समस्त गुजरात राजपूत समाज अहमदाबाद आदि संस्थाओं के प्रतिनिधि भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का संचालन देवेन्द्र सिंह काणेटी ने किया। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

पाली

चितौड़गढ़

संपादकीय

शत्रु और मित्र को जानें और पहचानें

व्यक्ति में अपने शत्रु और मित्र की पहचान होना जरूरी है। यदि इस पहचान में गफलत हो जाए तो जीवन में अवरोध पैदा हो जाता है। यदि शत्रु को मित्र मान लिया जाए तो उसकी शत्रुता से आंखें मूंद ली जाती हैं और वह हमारे से शत्रुता निभाते हुए हमें खोखला करता जाता है। इसी प्रकार यदि मित्र को शत्रु मान लिया जाए तो हम हमारे हितेषी द्वारा किए जा रहे हितचिंतन से वंचित हो जाते हैं और अंततः हमारा हितेषी ही हमारा शत्रु हो जाता है। इसलिए हर व्यक्ति में अपने शत्रु और मित्र को पहचान कर उसके साथ उपयुक्त व्यवहार करने की क्षमता होनी चाहिए।

व्यक्तियों से मिलकर ही समाज बनता है इसलिए जो बात व्यक्ति पर लागू होती है वह कमोबेश समाज पर भी लागू होती है। इसलिए जिस प्रकार व्यक्ति में अपने शत्रु और मित्र को पहचान कर यथोचित व्यवहार करने की क्षमता होनी चाहिये वैसे ही समाज में भी क्षमता विकसित होनी चाहिए अन्यथा समाज के जीवन में भी वैसा ही अवरोध पैदा होता है जैसा व्यक्ति के जीवन में। यह बात हमारे समाज पर भी लागू होती है। प्रारंभ से ही हमारे समाज की गौरवशाली परंपराओं के कारण अनेक लोग ईर्ष्या वश शत्रुता निभाते आ रहे हैं वहीं अनेक लोग हमारी इन सात्विक त्यागमूलक परंपराओं के कारण हमारे स्वाभाविक मित्र एवं प्रशंसक रहे हैं इसलिए हमें भी इनकी पहचान कर समुचित व्यवहार करना चाहिए। आजादी से पूर्व सदियों तक हमारे पूर्वज स्थानीय स्तर पर जनता का नेतृत्व करते रहे थे और शासक के रूप में जनता उनका नियंत्रण स्वीकार करती थी इसलिए आजादी के बाद एवं इससे पहले भी जनता का नेतृत्व करने को उत्सुक अतिमहत्वाकांक्षी लोग सदैव हमारे से शत्रुता रखते आये हैं। ऐसे लोगों द्वारा हमारे विरुद्ध किए जा रहे षड़यंत्रों की एक लंबी फेहरिस्त है और यह आज भी बदस्तूर जारी है। हमारे साथ विडंबना यह है कि हम स्वभाव से निष्कपट, सीधे और सरल होते हैं इसलिए इन षड़यंत्रों की तह तक जाये बिना हम जो दिखता है उसे ही सही मान लेते हैं और परिणामतः व्यवहार में संतुलन नहीं रख पाते। आजादी के तुरंत बाद देखें तो सत्ता के समीकरण बदल रहे थे, हमारे विरोधियों ने इस बात को जाना और उन्होंने सत्ता के नवोदित केन्द्र कांग्रेस में अपना स्थान बनाया। कांग्रेस पार्टी के माध्यम से उन्होंने अपना षड़यंत्र चलाया और हम पूरी कांग्रेस को हमारा विरोधी मानकर उसके सामने ताल ठोकते रहे। कालांतर में समाजवादियों का बोलबाला होने लगा तो फिर सत्ता के लालची अतिमहत्वाकांक्षी लोग समाजवादी हो गये और हमारे ही कांग्रेस विरोध का उपयोग कर सत्ता की सीढ़ीयां चढ़ने लगे और हम जहां के तहां ही बने रहे। समय बीतता गया और तथाकथित दक्षिणपंथियों का बोलबाला बढ़ने लगा, हमारा विरोध करने वाले लोग दक्षिणपंथी बन गये और जिस दक्षिणपंथ को हम हमारा मान रहे थे वहां भी हमारे खिलाफ षड़यंत्र हो रहे हैं और हम आजकल उनको दुश्मन मानने की तैयारी कर रहे हैं।

अलग अलग जातियों को हमारे खिलाफ तैयार किया गया, कभी श्रमजीवी जातियों को हमारे खिलाफ खड़ा किया गया और उनको हमने दुश्मन माना तो कभी बुद्धिजीवी जातियों को हमारे खिलाफ खड़ा किया गया और हमने उनको दुश्मन मानना प्रारंभ कर दिया। कभी जाटों को हमारा दुश्मन बनाया गया तो कभी गुर्जरों को। कभी ब्राह्मणों को हमारा दुश्मन सिद्ध किया गया तो कभी मेघवालों को। कोई कहता है वनवासी हमारे दुश्मन है तो कोई कहता है शिल्पी। लेकिन हमारे लिए विचारणीय यह है कि क्या कांग्रेस हमारी दुश्मन है, क्या कथित वामपंथ हमारा दुश्मन हैं या क्या आजकल प्रभावी चल रहा दक्षिणपंथ हमारा दुश्मन है? जाट हमारे दुश्मन हैं या गुर्जर? ब्राह्मण हमारे दुश्मन हैं या बनिये? मेघवाल हमारे दुश्मन हैं या भील? मूसलमान हमारे दुश्मन हैं या ईसाई?

वास्तविकता यह है कि न तो पूरी कांग्रेस हमारी दुश्मन है और ना ही पूरे समाजवादी। ना पूरा वामपंथ हमारा दुश्मन है और ना ही पूरा दक्षिणपंथ। ना सभी जाट कभी हमारे दुश्मन हुए और ना ही ब्राह्मण। ना सब मेघवाल कभी हमारे दुश्मन थे और ना ही सब भील। कोई भी पूरा वर्ग, जाति, विचारधारा या दल कभी हमारे दुश्मन नहीं रहे और ना ही आज हैं। हर वर्ग, जाति, विचारधारा या दल में हमारे शुभचिंतक पहले भी थे और आज भी हैं। तब प्रश्न उठता है कि जब सब जगह मित्र हैं तो दुश्मन कौन हैं? तो जहाँ मित्र हैं, शुभचिंतक हैं वहीं दुश्मन भी हैं। वास्तव में हमारी दुश्मन वह ईर्ष्यालु प्रवृत्ति है जो हमारे पूर्वजों की उत्सर्ग मूलक महान परंपरा के कारण समाज में हमारी इस महान कौम को मिलने वाले सम्मान से कुंठित है। अपनी आत्महीनता से ग्रसित ऐसे लोग हैं जिनको सदैव यह डर लगा रहता है कि समाज के सामने हमारा वास्तविक स्वरूप आया तो उनकी स्थिति कमजोर हो जाएगी। इस प्रवृत्ति के लोग सदैव यह प्रयास करते रहते हैं कि हमारी ऊर्जा व्यर्थ के विवादों में लगी रहे, हमारा जनाधार किसी न किसी तरीके से कम होता रहे। हम कुछ न कुछ ऐसा करते रहें जिससे हमारी ही ऊर्जा हमारे आगे बढ़ने में उपयोग होने की अपेक्षा हमें पीछे धकेलती रहे। इस प्रवृत्ति के लोग कांग्रेस में भी हैं तो भाजपा में भी हैं। वामपंथियों में भी हैं तो दक्षिणपंथियों में भी हैं। जाटों में भी हैं तो ब्राह्मणों में भी हैं। मेघवालों में भी हैं तो भीलों में भी हैं। बनियों में भी हैं तो गुज्जरों में भी हैं। कुल मिलाकर बात यह है कि सब जगह हमारे शुभचिंतक और सद्भावी भी हैं तो सब जगह हमारे शत्रु भी हैं। ऐसे में ही हमारी व्यवहार कुशलता की परीक्षा होती है एवं सावधानी पूर्वक शत्रु और मित्र की पहचान कर यथोचित व्यवहार करने की आवश्यकता होती है। लेकिन क्या हम ऐसा कर पाते हैं? जब किसी जाति विशेष के एक शरारती तत्व द्वारा हमारे खिलाफ कुछ लिखा या कहा जाता है तो हम भी उस जाति विशेष के खिलाफ लिखने या बोलने लगते हैं। जब किसी राजनीतिक दल विशेष के किसी व्यक्ति द्वारा हमारे खिलाफ कुछ लिखा या बोला जाता है तो हम भी उस संबंधित राजनीतिक दल के खिलाफ लिखने या बोलने लगते हैं। क्या ऐसा करते समय हम विचार कर पाते हैं कि हमारे ऐसा करने से उस जाति या दल में बैठा हमारा शुभचिंतक हमारे बारे में क्या सोचता होगा? क्या हमारे द्वारा लगातार ऐसा किए जाने के बावजूद भी वह हमारा शुभचिंतक रह पाता है? इस प्रकार कहीं हमारा यह व्यवहार हमारे शत्रुओं में वृद्धि तो नहीं कर रहा होता है? ऐसे में प्रश्न उठता है कि तो फिर हम क्या करें? क्या हमारे से शत्रुता रखने वालों के आक्रमणों को सहन करते जायें? उत्तर निश्चित रूप से ना में ही आएगा। हमारे से शत्रुता रखने वाले को सहन नहीं करना है, माफ भी नहीं करना है, उसे भूलना भी नहीं है। लेकिन शत्रु की शत्रुता का जबाब देने के लिए मित्र को शत्रु भी नहीं बनाना है। हमें चयन करना पड़ेगा, कौन शत्रु है और कौन मित्र है, इसकी पहचान करनी पड़ेगी और फिर जो शत्रु है उसी के खिलाफ अभियान चलाना पड़ेगा। जिस जाति, वर्ग, विचारधारा और दल में हमारे शत्रु हैं वहां हमारे शुभचिंतकों को बढ़ाना पड़ेगा, उनसे संवाद स्थापित करना पड़ेगा और फिर उनको ही उनके यहां मौजूद हमारे शत्रुओं के विरुद्ध खड़ा करना पड़ेगा और ऐसा करने के लिए हमारे समाज में मौजूद ऐसे तत्वों के खिलाफ हमें भी खड़ा होना पड़ेगा जो केवल अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के कारण उनसे शत्रुतापूर्ण व्यवहार करते हैं। वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में जिनके शुभचिंतक ज्यादा होते हैं वे ही शक्तिशाली होते हैं और परमेश्वर की कृपा से हमारे रक्त में यह विशेषता है कि वह अपने पराये की बात से ऊपर उठकर सभी को अपना बनाने की क्षमता रखता है। इसलिए आयें हम हमारे शत्रु और मित्र को पहचानने की क्षमता विकसित करें, मित्रों की संख्या को बढ़ायें और वास्तविक शत्रुओं की शत्रुता का यथोचित जबाब देवें।

शाकम्भरी का चाहमान वंश

विग्रहराज चतुर्थ के बाद अपरगांगेय और पृथ्वीराज द्वितीय क्रमशः शासक बने। पृथ्वीराज द्वितीय ने अपने समकालीन लाहौर के तुर्कशासक खुसक मलिक ताजुद दौला को परास्त किया जो कि एक क्रूर और विलासी शासक था। पृथ्वीराज द्वितीय ने बहुत कम समय तक शासन किया। 1169 ई में पृथ्वीराज द्वितीय की मृत्यु के बाद सोमेश्वर चाहमान साम्राज्य का शासक बना, जो पृथ्वीराज द्वितीय का चाचा लगता था। सोमेश्वर का बाल्यकाल अन्हिलवाड़ा में व्यतीत हुआ और युवावस्था में चालुक्य शासक कुमारपाल ने सोमेश्वर को सेना में उच्च पद से सुशोभित किया। 'पृथ्वीराज विजय' ग्रन्थ के अनुसार सोमेश्वर ने कोंकण के शिलाहारवंशी शासक मल्लिकार्जुन को युद्ध में परास्त किया और उसका वध कर दिया। प्रारम्भ में सोमेश्वर के संबंध चालुक्य वंश से अच्छे रहे परन्तु अजयपाल के चालुक्य शासक बनने के बाद चालुक्यों से उसके संबंध अच्छे नहीं रहे और सोमेश्वर को चालुक्यों से पराजय का सामना करना पड़ा। सोमेश्वर को शासन कार्य में अपनी मंत्री कदम्बवास (जिसे साहित्यक ग्रन्थों में कैमास कहा गया है) का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। सोमेश्वर ने अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया। सोमेश्वर ने (1169-1177 ई.) तक शासन किया। सोमेश्वर के बाद उसकी रानी कर्पूरीदेवी से उत्पन्न उसका पुत्र पृथ्वीराज शासक बना, जो पृथ्वीराज तृतीय नाम से इतिहस में प्रसिद्ध है। पृथ्वीराज तृतीय चाहमान वंश का ही नहीं अपितु भारतीय इतिहास के महानतम शासकों में से एक है। कथाओं में पृथ्वीराज तृतीय को 'राय पिथौरा' के नाम से भी बुलाया गया है। अपने पिता सोमेश्वर की मृत्यु के समय पृथ्वीराज अल्पव्यस्क था अतः पृथ्वीराज के शासक के आरंभिक काल में उसकी माता कर्पूरीदेवी ने संरश्रिका के रुप में कार्य किया। इस समय सोमेश्वर के मंत्री कदम्बवास जो पृथ्वीराज तृतीय के भी प्रमुख मंत्री रहे, ने राज्य संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। इसके अतिरिक्त पृथ्वीराज के चाचा भुवनेकमल्ल ने भी प्रशासनिक कार्यों में अल्पव्यस्क पृथ्वीराज को भरपूर सहयोग दिया। साहित्यक ग्रन्थों 'हमीर काव्य' तथा 'पृथ्वीराज रासो' से पता चलता है कि पृथ्वीराज को विविध विद्याओं और कलाओं की शिक्षा दी गई जिनमें पृथ्वीराज ने निर्पुणता प्राप्त की। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

कृतज्ञता प्रकटीकरण कार्यक्रमों का आयोजन

केलवाद

बीकानेर

(पेज तीन से लगातार)

2 जनवरी को चित्तौड़गढ़ प्रान्त की ओर से सहयोगी कार्यकताओं के प्रति आभार प्रकटीकरण हेतु चित्तौड़गढ़ के गांधीनगर स्थित जौहर भवन में कार्यक्रम रखा गया। केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर की भावना के अनुरूप हम उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करें जिन्होंने संघ के लिए श्रम, साधन व संकल्प के साथ कार्य किया। हम सभी पर परमेश्वर की कृपा रही जिससे इस कार्य के प्रति सबके मन में सकारात्मकता उत्पन्न हुई और हीरक जयंती का एक विराट एवं भव्य स्वरूप जयपुर में हमारे सामने प्रकट हुआ। चित्तौड़गढ़ विधायक चंद्रभान सिंह आक्या, भाजयुमो के पूर्व जिलाध्यक्ष हर्षवर्धनसिंह रूद, मीना कंवर सहाड़ा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। इसी दिन अजमेर प्रांत के सहयोगियों का आभार प्रकट करने के लिए सभा का आयोजन किया गया जिसमें केकड़ी क्षेत्र के समाजबंधु उपस्थित रहे। पूर्व प्रधान भूपेन्द्र सिंह सावर, शैलेंद्र सिंह पिपलाज, कर्नल रघुवीर सिंह गोयला, गोविंद सिंह जोधा बघेरा को हीरक जयंती स्मारिका भेंट की गई। प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालिया सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

उदयपुर के सुखाड़िया विश्वविद्यालय स्थित बप्पा रावल अतिथि गृह में 8 जनवरी को विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसका विषय 'भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के सशक्तिकरण में श्री क्षत्रिय युवक संघ की भूमिका' रखा गया। दलपत सिंह गुडा केसर सिंह ने उपस्थित सामजबन्धुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली की जानकारी प्रदान की। प्रादेशिक परिवहन अधिकारी प्रकाश सिंह राठौड़ ने कहा कि भारतीय संविधान की उद्देशिका, मूल अधिकार, मूल कर्तव्य, नीति निर्देशक तत्व आदि में जो मूल तत्व वर्णित हैं वे सभी क्षात्र धर्म और क्षत्रिय की जीवन पद्धति में अंतर्निहित हैं। कार्यक्रम में उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश रामचंद्र सिंह झाला, सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति अमेरिका सिंह, जनता सेना के संरक्षक रणधीर सिंह भीण्डर, लेफ्टिनेंट जनरल एन के सिंह, कांग्रेस के निवर्तमान देहात अध्यक्ष लाल सिंह झाला, बीएन विश्वविद्यालय के चेयरमैन प्रदीप कुमार सिंह सिंगोली, भाजपा नेता हिम्मत सिंह झाला सहित अनेकों गणमान्य समाज बंधु उपस्थित रहे। संभागप्रमुख भंवर सिंह बेमला ने हीरक जयंती कार्यक्रम में सहयोग के लिए सभी का आभार प्रकट किया।

गोहिलवाड़ संभाग की बैठक 9 जनवरी को वल्लभीपुर पुलिस स्टेशन में आयोजित हुई। केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयंती पर ऐतिहासिक कार्यक्रम के आयोजन के बाद हमारी संघ और समाज के प्रति जिम्मेदारी बढ़ गई है। अब हमें नये उत्साह और जागरूकता से कार्य करना है। संभाग प्रमुख धर्मेंद्रसिंह आम्बली स्वयंसेवकों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

वल्लभीपुर (गुजरात)

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री
बॉयज हॉस्टल
BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

शाखा अमृत

28 नवम्बर 2021 को रविवारीय शाखा में पूज्य तनसिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या 227 पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बताया कि इस अवतरण मे पूरी बात भक्ति पर कही गई है, लेकिन हमें इसे पूरी तरह से श्री क्षत्रिय युवक संघ पर लागू करना है। यह प्रश्न उठ सकता है कि संघ की भक्ति या काम कोई क्यों करे? क्या मिलता है, कोई तनख्वाह नहीं, ना कोई तरक्की, ना कोई वेतन वृद्धि और कोई छुट्टी भी नहीं। जैसे भगवान के एक भक्त के लिए भगवान की तरफ से सांसारिक वस्तुएं मिलती हुई प्रतीत नहीं होती, उसी प्रकार संघ का भी कार्य है। जहां कुछ मिलता है वहां तो भीड़ जुटती है, सिफारिशें लेकर लोग पहुंचते हैं। लेकिन सामाजिक कार्य में, जहां कुछ मिलता नहीं, बिरले ही जुटते हैं। इसीलिए हम देखते हैं कि 75 वर्ष में भी समाज का कितना कम अंश श्री क्षत्रिय युवक संघ से जुड़ सका है। इतने बड़े समाज में संघ के सीमित लोग ही हैं क्योंकि यह गिरधर की चाकरी जैसा ही कार्य है। सांसारिक सुविधा की कोई बात यहां नहीं है, बल्कि उसमें अड़चने ही डाली जाती हैं, कमी ही की जाती है। तो ऐसी चाकरी कौन करेगा? सांसारिक माया में सभी उलझे हुए हैं कि सांसारिक चाह के अनुसार हमें कुछ मिलता हो तो हम इस ओर आकर्षित होते हैं अन्यथा नहीं और श्री क्षत्रिय युवक संघ में वह मिलता नहीं। यहां कोई मान-सम्मान नहीं मिलता। कोई आपका माला पहनाकर स्वागत नहीं करता है। लेकिन जिस प्रकार गिरधर की चाकरी में जो पारंगत हो जाता है उसको सब कुछ मिलता है, उसका भाव ही परिवर्तित हो जाता है। उसके लिए सुख भी वही है कि मैं भक्ति कर रहा हूँ, प्रभु को याद कर रहा हूँ, स्मरण कर रहा हूँ इसी प्रकार संघ में जो पूरी लगन के साथ संघ के कहे अनुसार चलता है, वो निश्चित रूप से उस सुख और आनंद को प्राप्त करता है जो एक भक्त को प्राप्त होता है। इस दृष्टि से संघकार्य और ईश्वर की भक्ति में कोई अंतर नहीं है। आगे स्वयंसेवकों के प्रश्नों के उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि भौतिक रूप से संघ कुछ नहीं देता लेकिन संघ वो कार्यप्रणाली देता है कि इसमें कार्य करते-करते व्यक्ति के जीवन में निखार आता है। संघ में प्रारम्भ में भले ही कोई किसी अन्य आकर्षण से आए लेकिन टिकेगा वही जो धीरे-धीरे संघ की परीक्षाओं में खरा उतरते हुए स्वयं यह अनुभव करता है कि इसी कार्य में जीवन की सार्थकता है।

5 दिसम्बर 2021 को पूज्य श्री की डायरी के अवतरण संख्या 409 पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इस अवतरण में बताया गया है कि जो कुछ उपलब्ध है उससे जो संतुष्ट है वही सच्चा भक्त है। जो कुछ नहीं मिला है उसकी अगर शिकायत है तो वो भक्ति नहीं है। अगर हमारे सामने मुसीबत आती है तो उसमें भी हमारा यही भाव रहे कि यह ईश्वर की इच्छा है। इस तरह का भाव अगर हमारा हो तो भक्ति पैदा हो सकती है। आफतें आयेंगी अतः हमें दृढ़ रहकर निरन्तर कर्मशील रहना चाहिए। अपने आप को इतना मजबूत बना दें कि किसी भी प्रकार का विरोध हो तो हमें विचलित न कर सके। श्री क्षत्रिय युवक संघ का भी प्रारम्भ से विरोध हुआ है और बड़े-बड़े लोगों ने, संगठनों ने विरोध किया है। तन सिंह जी ने इस विरोध से कभी विचलित ना होकर सब सहन किया। यही समाज की, ईश्वर की भक्ति है। भगवान ने विरोधों को भेजा क्योंकि संघ कार्य ईश्वर की चाह है। इसलिए ईश्वर चाहता है कि जो उसका काम करते हैं वे मजबूत बनें। इन संघर्षों से गुजरकर ही भक्ति जाग्रत होती है। जो है उससे हम संतुष्ट हैं, उसके अलावा कुछ नहीं चाहिए हमारा यह भाव सदैव बना रहना चाहिए। यह भक्ति ही है। समाज की भक्ति और ईश्वर की भक्ति, दोनों एक ही है। ईश्वर के विधान को स्वीकार करें एवं उसके लिए नरक में भी जाना पड़े तो उसे वरदान मानकर प्रसन्नता पूर्वक जाएँ क्योंकि भक्ति में कभी भी कोई शिकायत नहीं होती। भक्ति में कभी कोई असफलता या निराशा नहीं आ सकती। हम जो भक्ति कर रहे हैं वही हमारा उद्देश्य बन जाता है। हम यह महसूस करें कि हम कितने भाग्यशाली हैं कि हमें ऐसा अद्भुत मार्ग मिला है और उस मार्ग पर विरोध या कठिनाई आ रही है तो यह मानें कि भगवान हमारी परीक्षा ले रहे हैं। संघ में निष्काम कर्म योग, ज्ञान योग एवं भक्ति योग का समन्वय है। इन सबके बारे में हमें संघ में बताया गया है एवं हर मार्ग पर हम बढ़ रहे हैं। कृतज्ञता का भाव हमारे व्यवहार में आ जाये तो यह भक्ति ही है । आगे स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे पास जितनी शक्ति है वो पूरी शक्ति लगा कर काम करेंगे तो भक्ति पैदा होगी ही। हम अपने आप का अन्तरावलोकन करें कि संघ क्या चाहता है और मैं क्या कर रहा हूँ? संघकार्य में यदि कोई बाधा आती है तो उसे ईश्वर की इच्छा मानें एवं कोई सफलता आई तो भी ईश्वर की कृपा समझें। तब संघ का काम ही भक्ति बन जायेगा।

25 नवम्बर को पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'चलता रहे मेरा संघ' पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह जी धोलेरा ने बताया कि मन इच्छा करता है एवं इच्छा ही किसी कर्म का आधार है। यदि चाह ही नहीं है तो कुछ भी कर्म नहीं होता। विचारों का बीज ही कर्म के पौधे के रूप में पनपता है। चाह या विचार में यदि दृढ़ता आ जाती है तो वह संकल्प बन जाता है। हमारे सभी विचार संकल्प नहीं बन सकते। संकल्प यदि दुर्बल होगा तो सफलता संभव नहीं है। यह सहगीत पूज्य श्री तनसिंह जी के पवित्र दृढ संकल्प का द्योतक है। पूज्य श्री की चाह है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ चलता रहे। संघ पूज्य श्री की मानसिक संतान है। संतान के प्रति सबकी चाह रहती है लेकिन केवल चाह से संघ थोड़ी चलता हैं। संघ तभी चलता रहता है जब वह स्वस्थ हो, सशक्त हो, चेतना से भरा हुआ हो और दीघार्यु हो तभी वह कर्मशील बना रहेगा। संघ के चलते रहने की चाह में पूज्य श्री के किसी निजी स्वार्थ की बात नहीं है, उसमें तो सम्पूर्ण मानवता के कल्याण की बात है। कई पीढ़ियों का कल्याण इसमें निहित है। अतः पूज्य श्री की यह चाह कि संघ चलता रहे, सारे समाज, देश, जाति और धर्म से ऊपर उठकर प्रत्येक मनुष्य की चाह बन जाए। इसका सबसे अधिक दायित्व संघ से जुड़े लोगों का अर्थात हमारा है क्योंकि हमें यह संघ थाती के रूप में मिला है। इस थाती को सम्भाल कर रखना, उसका सदुपयोग करना हमारा दायित्व है और वही पूज्य श्री का सच्चा सम्मान करना होगा। हम यह दायित्व भली प्रकार से तभी निभा सकेंगे जब हम संसार में अच्छाई का प्रसार करते हैं, हमारे जीवन से लोगों को प्रेरणा मिलनी चाहिए। इसलिए पूज्य श्री हमें कहते हैं कि कहीं रुक ना जाए पांव कहीं थक ना जाए मन। पूज्य श्री साधक की आँख में समाज के लिए कुछ कर गुजरने की चाह देख रहे हैं और यहां संघ में उस चाह की पूर्ति होगी ऐसी आशा साधक की आंख में दिखाई पड़ती है। समाज के प्रति जो पीड़ा है उसे कोई छिपा नहीं सकता। पीड़ा व्यक्ति को कुछ न कुछ करने को विवश करती है। इस पीड़ा के कारण ही हम संघ में आते हैं और जो यहाँ रूक जाते हैं वे संघमय बन जाते हैं। इस राह में जब हमें साथी मिलते हैं तब नई प्रेरणा मिलती है एवं हम नए उत्साह से चलने लगते हैं। नभ के सितारे की तरह समाज के अंधेरे को मिटाने के लिए हम जो कुछ कर सकते हैं वह करेंगे तभी कर्तव्य का प्रकाश समाज में फैलेगा।

महान विजेता महाराव सुरताण देवड़ा

(डॉक्टर उदय सिंह डिंगार, इतिहासकार)

सिरोही नरेश महाराव सुरताण देवड़ा, जो कि मेवाड़ के महाराणा प्रताप के समकालीन एवं उनके प्रबल सहयोगी थे, उन्होंने अपनी तलवार के बल पर अल्पायु में ही वीरता का इतिहास रचने में सफलता प्राप्त कर ली थी। महाराव सुरताण के राजगद्दी पर आरूढ़ होने के समय की घटनाओं पर मुहणोत नैंणसी की ख्यात, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, डॉ० सोहनलाल पटनी समेत कई इतिहासकारो एवं साहित्यकारों के लेखन में वर्णन है कि मेवाड़ के इतिहास में जो स्थान महाराणा प्रताप का है, वही स्थान सिरोही राज्य के इतिहास में महाराव सुरताण का है। महाराव सुरताण का जन्म विक्रम संवत 1616 तदनुसार सन 1559 ईस्वी में सिरोही राज्य के नंदीवर्धनपुर जिसे वर्तमान में नांदिया कहा जाता है, वहां के सामन्त भाण देवडा की जागीर में हुआ था। वे बचपन से ही अचूक तीरंदाज थे। सिरोही राज्य के तत्कालीन शासक महाराव मानसिंह के कोई राजकुमार नहीं होने से उनकी अंतिम इच्छा के अनुरूप महाराव सुरताण को सिरोही राज्य की राज गद्दी पर बिठाया गया। उनके लिए कहा जाता है कि 51 वर्ष के जीवनकाल में उन्होंने 52 युद्ध जीते थे। उनके लिए जनमानस में यह उक्ति प्रचलित रही है कि - 'वर्ष इकावन जीवियो अनाड, बावन जीतियो महाराड!' सन् 1576 ईस्वी के इतिहास प्रसिद्ध हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात महाराणा प्रताप के जंगल-जंगल आजादी की अलख जगाते हुए मुगलों का डटकर सामना करने के उस विषम संघर्षशील काल में महाराव सुरताण ने महाराणा प्रताप के साथ सहयोगात्मक एवं सकारात्मक भूमिका निभाकर आजादी की ज्योति में अपना योगदान दिया, जो इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा। महाराणा प्रताप के वन गमन के दौरान महाराव सुरताण ने प्रताप का सहयोग कर उन्हें आबू की दुर्गम पहाड़ियों में रहने का निमंत्रण देकर प्रताप का पूर्ण सहयोग किया। इतना ही नहीं, तत्कालीन समय में जोधपुर के राव चंद्रसेन राठौड के स्वततन्त्रता संघर्ष में भी महाराव सुरताण ने साथ दिया था। सिरोही नरेश महाराव सुरताण के स्वतन्त्रता की संघर्ष में प्रताप व चंद्रसेन का साथ देने के कारण व सिरोही पर मुगल सत्ता स्थापित करने के उद्देश्य से मुगल बादशाह अकबर ने सिरोही पर आक्रमण का आदेश दिया। अकबर ने महाराणा प्रताप के लघु भ्राता राणा जगमाल जो कि सिरोही के दामाद थे एवं जोधपुर के रायसिंह के नेतृत्व में एक सेना सिरोही पर आक्रमण करने हेतु भेजी। मुगल सेना के सिरोही आक्रमण के दौरान महाराव सुरताण ने आबू पर मोर्चा संभाला, वहीं मुगल सेना ने आबू के दक्षिणी क्षेत्र दत्ताणी में सैन्य पड़ाव किया। मुगल सेना द्वारा नितोड़ा ग्राम में आक्रमण कर दिया गया। गांव में आगजनी की घटना को महाराव सुरताण ने आबू की पहाड़ियों से देखा। तब महाराव सुरताण ने मुगल सेना से आरपार के संघर्ष का निर्णय लिया। 17 अक्टूबर 1583 ईस्वी, देवोत्थान एकादशी के दिन प्रातः काल महाराव सुरताण की सेना ने दत्तानी रणखेत में मुगल सेना पर आक्रमण कर दिया। भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें मुगल सेना को पराजित होना पडा। मुगल सेना के दोनों सेनापति इस युद्ध में काम आये एवं शाही सेना को पराजय का मुंह देखना पड़ा। मुगल सेना की पराजय एवं महाराव सुरताण की यह विजय इतिहास प्रसिद्ध है। युद्ध में सिरोही राज्य के सेनापति समर सिंह देवड़ा डूंगरावत ने रणभूमि में गौरवपूर्ण वीरगति प्राप्त की। महाराव सुरताण को विजय की बधाई देते हुए रणभूमि में उपस्थित राष्ट्रीय कवि दुरसा आढा ने ये पंक्तियां कही- 'नंदगिरी नरेश कटार बद्ध चौहान, दत्तानी खेतरा जैत जोहार।' अर्थात हे आबू नरेश कटार बद्ध देवड़ा चौहान! इस दत्तानी रणभूमि के विजेता महाराव सुरताण की जय हो। रणभूमि में अदम्य साहस और वीरता के साथ सिरोही राज्य को विजय दिलवाकर वीरगति को प्राप्त होकर बलिदान की अमर गाथा रचने वाले सिरोही राज्य के सेनापति ठाकुर समर सिंह देवड़ा डूंगरावत पाड़ीव की शहादत पर राष्ट्र कवि दुरसा आढा की वाणी इस प्रकार फूट पड़ी - 'धर रावा, जस डूंगरा, बद्र पोत्र शत्रुहाण। समरे मरण सुधारियो, चहुं थाका चौहान।।'

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

इतिहास केवल... किसी व्यक्ति को उनमें वह विश्वास दिखाई दे सकता है जो पानी भरती हुई उन स्त्रियों में जैताजी, कूम्पा जी आदि वीरों के प्रति था। किसी को उनका कर्तव्यपालन दिखाई दे सकता है कि कर्त्तव्य के लिए उन्होंने इस प्रकार का युद्ध किया। लेकिन वास्तव में यह विशेषता खून की है। उस खून की है जो हमें भी इस कौम से, हमारे पूर्वजों से मिला है। ऐसी गौरवपूर्ण परंपरा हमको मिली है, जिस पर हमको नाज होता है। उपरोक्त बातें माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने पाली जिले के बर कस्बे के निकट स्थित गिरी-सुमेल रणस्थली में मातृभूमि की रक्षार्थ बलिदान होने वाले राव जैता जी, राव कूम्पा जी आदि वीरों के बलिदान दिवस पर 5 जनवरी, 2022 को आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि जिस गौरव को याद करके हम फूल कर कुप्पा होते हैं, जिस गौरव को प्राप्त करके, जिस इतिहास का वर्णन सुनकर, हमारे पूर्वजों का वर्णन सुनकर हमारा रोम-रोम पुलकित हो उठता है, क्या वह केवल पुलकित होने के लिए ही है? नहीं, यह तो हमारे ऊपर ऋण है, कर्जा है जिसे हमें चुकाना है। जो हमारे पूर्वजों का संचय किया हुआ गौरव है, इस संचय का हम उपयोग ही करते रहेंगे तो यह कब तक चलेगा? हम सभी भली भांति जानते हैं कि बिना आमदनी के यदि खर्च चलता रहेगा तो क्या हालत होती है? हमारे गौरव का संचय भी खत्म होने के कगार पर है। हमारे पूर्वजों की कर्मस्थली पर आकर इस प्रकार का विचार करना हमारे लिए आवश्यक है कि क्या हम केवल भाषण देते और सुनते ही रहें और करें कुछ भी नहीं? हम सभी लोग इस प्रकार के कार्यक्रमों में आते हैं क्योंकि हमारी भावनाएं इस कौम के साथ जुड़ी हुई हैं, इस जाति के साथ जुड़ी हुई हैं। लेकिन क्षत्रियत्व के गुण हमारे अंदर किस प्रकार से आ सकते हैं, इसका विचार करना हमने छोड़ दिया है। विचार की जो शक्ति है वह समाप्त सी हो गई है। आज यदि हमसे पूछा जाए कि समाज के लिए क्या करने की आवश्यकता है तो कोई शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने की बात करेगा, कोई नौकरी करने और बेरोजगारी मिटाने की बात कहेगा। अनेक लोगों को यह लग सकता है कि आज राजनीति चरम पर है इसलिए हमारे लोगों को राजनीति में आना चाहिए तो ही समाज का भला होगा तो कोई समाज की कुरीतियों को मिटाने की बात कह सकता है। ऐसे अनेकों अनेकों उत्तर दिए जा सकते हैं और इन सभी बातों में सच्चाई है, कोई भी बात झूठी नहीं है। कुरीतियों को भगा देंगे, नौकरी पा लेंगे, शिक्षा पा लेंगे, राजनीति में आ जाएंगे तो हमारे समाज का स्तर ऊंचा होगा इसमें किसी प्रकार की कोई दो राय नहीं है। लेकिन जिस बात पर हम जैता जी और कुम्पा जी का बलिदान दिवस मना रहे हैं, जिस गौरव को प्राप्त करने की हम बात कर रहे हैं वह बात दूसरी है। बहुत बड़ी नौकरी पा लेने से भी वह गौरव प्राप्त हो जाएगा यह आवश्यक नहीं है। यदि हम कुरीतियों को मिटा दें तो भी उस गौरव की प्राप्ति होगी, कोई आवश्यक नहीं है। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ थोड़ी सी अलग बात करता है कि यह सब तो होना चाहिए और इसके लिए समाज में बहुत से लोग इस प्रकार के कार्य कर रहे हैं लेकिन हमारे भीतर के क्षत्रियत्व को जीवित रखना सबसे अधिक आवश्यक है। श्री क्षत्रिय युवक संघ उस क्षत्रियत्व की बात करता है। उन्होंने कहा कि पूज्य तन सिंह जी रचित प्रार्थना 'क्षत्रिय कुल में प्रभु जन्म दिया' अभी हमने गाई। संघ की यह प्रार्थना केवल प्रतिदिन गाने के लिए नहीं है, यह हमारे भीतर उन विचारों और भावों को जन्म देने के लिए है कि क्षत्रियत्व क्या है, ईश्वर ने हमें क्षत्रिय कुल में जन्म दिया है तो उसके पीछे क्या कारण है? प्रत्येक कार्य का कोई कारण होता है, हेतु होता है। जिसके लिए हम को क्षत्रिय कुल में जन्म मिला है उस हेतु को हमें जानना है और श्री क्षत्रिय युवक संघ में उस हेतु को जानने का अभ्यास किया जाता है। केवल राजपूत के घर में जन्म लेने से ही हम क्षत्रिय नहीं बन गए। क्षत्रिय का अर्थ क्षय से बचाने वाला होता है। जो अन्यों को नष्ट होने से बचाने वाला है वह क्षत्रिय कहलाता है। हम अनुभव करें, विचार करें कि क्या हम इस प्रकार के क्षत्रिय हैं? गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि जो साधु जनों की रक्षा करता है, जो दुष्ट जन का संहार करता है वह क्षत्रिय है। क्या हम ऐसा कर पाते हैं? यदि हम ऐसा नहीं कर पाते हैं तो हम क्षत्रिय नहीं कहला सकते। क्षत्रिय के घर में यदि हम को जन्म मिल गया है तो उसकी उपयोगिता को हमें सिद्ध करना पड़ेगा। जैताजी, कूम्पा जी आदि वीरों ने अपनी उस उपयोगिता को सिद्ध किया इसीलिए आज हम यहां बैठकर उन्हें स्मरण कर रहे हैं। हम भी समाज, राष्ट्र और मानवता के लिए उपयोगी बनें क्योंकि जिस वस्तु की उपयोगिता समाप्त हो जाती है उसे फेंक दिया जाता है। जब तक हमारी उपयोगिता बनी रही संसार ने हमको सिर पर उठाए रखा और जब हमारी उपयोगिता समाप्त होने लगी तो संसार ने हमारी उपेक्षा प्रारंभ कर दी। यह प्रकृति का नियम है कि अनुपयोगी चीज कभी भी कोई घर में नहीं रखता। आज से 75 वर्ष पूर्व ही पूज्य तन सिंह जी ने यह समझ लिया था कि आने वाले समय में हमारी क्या स्थिति होने वाली है और उसी स्थिति के समाधान के लिए उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। संघ हमारे भीतर के क्षत्रियत्व को जागृत कर हमें समाज, राष्ट्र और मानवता के लिए पुनः उपयोगी बनाने का कार्य कर रहा है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बलिदान दिवस समारोह समिति के संयोजक कान सिंह उदेशीकुआ ने कहा कि संघ भी जैता, कूम्पा जैसे वीरों को पैदा करने का मार्ग है। इस कार्य में हम सभी को यथासंभव सहयोगी बनना चाहिए। भगवत सिंह बगड़ी नगर, इन्द्रसिंह बागावास व सुमेर सिंह कुम्पावत ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। समिति के अध्यक्ष हनुमान सिंह ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ, दातारसिंह अकोदिया (पूर्व प्रधान प्रतिनिधि), राजकंवर बर (पार्षद) आदि सामजबन्धुओं सहित उपस्थित रहे।

पूज्य तनसिंहजी... ऐसे में हम सबका दायित्व और बढ़ गया है। समाज और संसार की हमारे से अपेक्षाएं बढ़ी हैं और हमें इन अपेक्षाओं के अनुरूप स्वयं को तैयार करना है। अपनी ऊर्जा को गुणित करने के लिए समाज की सकारात्मक एवं सात्विक शक्ति से संपर्क बढ़ा कर उसे संयोजित करना है और फिर संघ के शिक्षण के माध्यम से उनके सामाजिक भाव को परिष्कृत करना है। संसार में वे लोग सदैव प्रासंगिक बने रहते हैं जो अपने मूल को भूले बिना समय के साथ अद्यतित होते रहते हैं और हमें भी इस बात की गांठ बांध लेनी है। पूज्य तनसिंह जी का विचार हमारा मूल है, उनकी कृपा हमारी पूंजी है और वह हमें तब ही हासिल होगी जब हम उनके द्वारा प्रसूत मार्ग पर स्वयं को समर्पित करेंगे। आयें, श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के चौथे स्थापना दिवस पर हम सब स्वयं को उस मार्ग पर आरूढ करें और अपने जीवन के सकारात्मक प्रवाह को गति प्रदान करें। संघ अपने इस आनुषंगिक संगठन से जुड़े सभी सहयोगियों, सद्भावियों एवं संपूर्ण समाज को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के चौथे स्थापना दिवस की बधाई प्रेषित करता है।

आसपुर... सामूहिकता के अभ्यास से ही व्यक्तिगत अहंकार को समाप्त करके समाज को एक सूत्र में बांधा जा सकता है। संघ की इस साधना का ही परिणाम हीरक जयन्ती समारोह के रूप में जयपुर में प्रकट हुआ जिसे देख कर हर कोई अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहा है। शिविर में प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, बाँसवाड़ा, राजसमंद, डूँगरपुर, उदयपुर जिलों की बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर के अंतिम दिन हीरक जयंती कार्यक्रम में डूँगरपुर प्रान्त के सहयोगियों का आभार प्रकटीकरण एवं स्नेह भोज कार्यक्रम भी आयोजित हुआ जिसमें संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा ने सभी सहयोगियों का आभार जताते हुए कहा कि हीरक जयन्ती कार्यक्रम ने पूरे देश के सामने अनुशासन एवं एकता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। आप सभी के सक्रिय सहयोग से ही यह सम्भव हो पाया है। संघ को सदैव समाज का सम्पूर्ण सहयोग मिलता रहा है और इसके लिए आप सब के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

देवीकोट... श्रद्धेय श्री आयुवान सिंह हुडील हमसे कहते हैं कि ऐसे पवित्र रक्त को लिए हुए हम कैसे अपने कर्तव्य मार्ग को भूल गए? कतिपय स्वार्थी तत्वों ने हमें बहका दिया, हमारा स्वरुप बिगाड़ दिया गया। लोगों में भ्रामक प्रचार किया गया कि हम अत्याचारी लोग थे, किंतु हम जैसे सुसंस्कृत लोगों से ही इस सुसंस्कृत राष्ट्र का निर्माण हुआ था। वाल्मीकि रामायण मे कहा गया है कि राम जैसे आचरण वाला पुरुषोत्तम अगर भूपति नहीं है तो वह भूभाग राष्ट्र नहीं कहलाता। 'तद वनम्भवति राष्ट्रम, यत्र रामो निवसतिः।' असंस्कृत प्रदेश भी सुसंस्कृत हो जाता है जहां राम जैसे लोग निवास करते हैं। आपके भी यहां आने से यह स्थान पवित्र हो गया। कुलीन लोग अगर गुणहीन हो तो आश्चर्य होता है और श्री क्षत्रिय युवक संघ ने हमें हमारी कुलीनता और उससे जुड़े दायित्व का बोध कराने का बीड़ा उठाया है। आपने यहां जाना है कि ईश्वर सर्वगुण संपन्न है और ज्यों ज्यों हम गुणग्रहण करेंगे त्यों त्यों हम ईश्वर के निकट जाते जाएंगे। इसके लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ ने सरलतम साधना हमें बताई है। हमारे अपनों के बीच, घर परिवार में रहते हुए अपने को गुणवान बनाने का शिक्षण श्री क्षत्रिय युवक संघ के अलावा कहीं नहीं मिलेगा। एक शिशु का मां जिस तरह से ध्यान रखती है श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी तरीके से हमारा ध्यान रखता है, हमें अपने पास रखना चाहता है, अपने हृदय से लगाकर रखना चाहता है। निश्चित रूप यह विदाई है लेकिन इसे यूं समझें कि हमारे कार्यक्षेत्र में जाने की विदाई है। आपने यहां से जो कुछ सीखा है, वह शाखाओं के माध्यम से, आचरण के माध्यम से समाज में भी बांटे। अपने पास नहीं रखे रहें नहीं तो वह श्रेष्ठ तत्व भी मलिन हो जाएगा। जितना बांटेंगे उतना बढेगा, उतना ही शुद्ध एवं स्वस्थ रहेगा। संभागप्रमुख तारेन्द्र सिंह झिनझिनयाली स्वयंसेवकों सहित शिविर में उपस्थित रहे।

(पृष्ठ चार का शेष)

शाकम्भरी... धनुर्विधा में पृथ्वीराज तृतीय ने विशेष निर्पुणता प्राप्त की, पृथ्वीराज अपने समय के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर थे। 1180 ई. के लगभग पृथ्वीराज ने चाहमान साम्राज्य के शासन का भार स्वतंत्र रूप से ग्रहण किया। इस समय चाहमान साम्राज्य के समक्ष अनेक कठिनाइयां थी। चाहमान साम्राज्य के समक्ष आई सभी चुनौतियों का सामना करते हुए पृथ्वीराज तृतीय चाहमान शक्ति एवं साम्राज्य के विस्तार में जुट गया। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ छह का शेष)

महान... आश्चर्यजनक तथ्य है कि सिरोही के शासक महाराव सुरताण देवडा ने तत्कालीन समय में महाराणा प्रताप एवं जोधपुर नरेश राव चंद्रसेन की सहायता कर भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित होने योग्य कार्य किया था लेकिन इतिहासकारों की लेखनी ने महाराव सुरताण के इन महान कार्यों को लिखने में न्याय नहीं किया। महाराव सुरताण ने उस समय की केंद्रीय शक्ति से शत्रुता लेते हुए राजपूताने के स्वतंत्रता सेनानियों की अग्रिम पंक्ति में स्वयं को खड़ा कर मुगल सत्ता का डटकर सामना किया था, साथ ही पड़ोसी शासकों महाराणा प्रताप एवं राव चन्द्रसेन का भी साथ दिया था। परन्तु इस महान विजेता, स्वतन्त्रता के महानायक को इतिहास में उचित स्थान नहीं मिला और महाराव सुरताण देवड़ा एवं दत्तानी युद्ध इतिहास के पन्नों में आज भी उपेक्षित है। हल्दीघाटी की ही भांति सिरोही राज्य का यह दत्तानी युद्ध एवं उसमें महाराव सुरताण की इस महान और गौरवशाली विजय को इतिहास में उचित स्थान क्यों नहीं मिला, यह एक विचारणीय प्रश्न है। अनदेखी का शिकार दत्तानी रणखेत आज भी गौरवशाली विजय एवं अतीत की गौरव गाथा को अपने आंचल में समेटे हुए आंसू बहा रहा है। स्वतंत्र भारत में इस ऐतिहासिक धरोहर के संरक्षण एवं इसे विश्व मानचित्र पर उचित स्थान दिलाने की आवश्यकता है। महाराणा प्रताप एवं महाराव सुरताण देवड़ा के स्वतंत्रता संघर्ष का प्रतीक यह दोहा जनमानस में अत्यंत प्रसिद्ध रहा है - 'अवरनृप पतशाह अगे, होय नृप जोड़े हाथ। नाथ उदयपुर नी नम्मो, नम्मो नी अरबुदनाथ।।' दोनों ही शासकों ने मुगल सत्ता के समक्ष अपना मस्तक नहीं झुकाया एवं स्वतंत्रता तथा स्वाभिमान के प्रतीक बने रहे।

शेरगढ़ में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

शेरगढ़ क्षेत्र के राजपूत समाज की प्रतिभाओं का सम्मान समारोह 2 जनवरी को आवड़ माताजी मंदिर प्रांगण में स्थित राजपूत सभा भवन में आयोजित हुआ जिसमें शेरगढ़ क्षेत्र से खेल जगत में राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता, राजनीति, शिक्षा, समाजसेवा, प्रशासनिक सेवाओं में चयनित युवाओं सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्रतिभाओं को पुरस्कृत किया गया। राजपूत विकास समिति शेरगढ़ परगना के तत्त्वावधान में आयोजित हुए चौथे प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन रामेश्वर मठ के महंत शिवगिरी महाराज के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शेरगढ़ विधायक मीनाकंवर ने कहा कि किसी भी समाज का विकास शिक्षित होने पर ही संभव है, इसलिए समाज की बालिकाओं को भी उच्च शिक्षा के लिए अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। शिवगिरी महाराज ने कहा कि क्षत्रिय का कर्तव्य जीव मात्र की रक्षा व सेवा करना है। हमें पूर्वजों के पथ पर चलने की आवश्यकता है। पूर्व विधायक बाबूसिंह राठौड़ ने कहा कि हमारे पुरखों ने धर्म रक्षार्थ अपने प्राणों की आहुति दी, उसी के कारण वे सभी के सम्मान के अधिकारी बने। उन्होंने शेरगढ़ में उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थापना की आवश्यकता जताई। प्रदेश कांग्रेस कमेटी सदस्य उम्मेदसिंह राठौड़ ने शेरगढ़ आवड़ माता मंदिर के पास राजपूत सभा भवन निर्माण के लिए सहयोग की घोषणा की। राणोसा प्रतापसिंह इन्दा ने समाजबंधुओं को 15 जनवरी को गोतावर बांध के शिलान्यास कार्यक्रम में आने का निमंत्रण दिया। मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा, शेरगढ़ प्रधान श्रवणसिंह जोधा, उपखंड अधिकारी पुष्पाकंवर सिसोदिया ने भी अपने विचार रखे। विकास समिति के सदस्य विरेन्द्रसिंह सेड़ेचा ने कमेटी का प्रतिवेदन पढ़कर सुनाया। संचालन कवि व राजस्थानी साहित्यकार मदनसिंह सोलंकियातला ने किया। पूर्व प्रधान भंवरसिंह इन्दा, पूर्व प्रधान बाबूसिंह इन्दा, प्रभुसिंह बुड़किया, जबरसिंह रायसर, पूर्व सरपंच कंवरसिंह केतु, डॉ. मनोहर सिंह सेतरावा, गायड़सिंह रायसर, भंवरसिंह नाथडाऊ, सरपंच प्रतिनिधि मदनसिंह शेरगढ़, भवानीसिंह देचू, सरपंच छोटूसिंह देवातु, विरेन्द्रसिंह शेरगढ़, डिप्टी सीएमएचओ प्रतापसिंह सेतरावा, वरिष्ठ वन्य जीव विशेषज्ञ डॉ. श्रवणसिंह राठौड़ केतु, सरपंच नाथूसिंह राठौड़ केतु कल्ला, पार्षद गिरधारीसिंह राठौड़ केतु, सरपँच लालसिंह गोपालसर, सरपंच हाथीसिंह बेलवा, सरपंच गोविंदसिंह सोइन्तरा, सरपँच चंद्रकंवर देवराजगढ़, कुम्भसिंह नाथडाऊ, भूरसिंह बस्तवा, भंवरसिंह देचू, सरपंच रामसिंह सुवालिया, विकास अधिकारी प्रवीणसिंह सगरा, सहायक आबकारी अधिकारी जितेन्द्रसिंह भालू, कॉपरेटिव निरीक्षक राजेन्द्रसिंह बस्तवा, विशनसिंह खिरजां, हुकमसिंह देवाणिया, सुरेंद्रसिंह केतु, किशोरसिंह केतु सहित समाज के सैंकड़ों प्रबुद्धजन कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

विद्या प्रचारिणी सभा भूपाल नोबल्स संस्थान का शताब्दी स्थापना वर्ष

2 जनवरी 2022 को उदयपुर में विद्या प्रचारिणी सभा भूपाल नोबल्स संस्थान का शताब्दी स्थापना वर्ष का समारोहपूर्वक आगाज किया गया। निरुपमा कुमारी मेवाड़ के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महिमा कुमारी मेवाड़ ने कहा कि 2 जनवरी 1923 को भूपाल नोबल्स संस्थान की स्थापना तत्कालीन महाराणा भूपाल सिंह जी की दूरदृष्टि और शिक्षा के प्रति उनके लगाव का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि किसी भी संस्था द्वारा 100 वर्ष की लंबी यात्रा को पूर्ण करना एक बड़ी उपलब्धि है। यह

यात्रा बिना किसी स्वार्थ के किए गये सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। गुरुमैया भुवनेश्वरी ने कहा कि शिक्षा तभी सम्पूर्ण बनती है जब उसमें समझ और संस्कार का समावेश हो। डॉ. युवराज सिंह झाला, प्रो. शिव सिंह सारंगदेवोत, डॉ. महेन्द्र सिंह राठौड़, प्रदीप सिंह सिंगोली, भगवत सिंह नेतावल ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। समारोह में विद्या प्रचारिणी सभा के सदस्य, ओल्ड बॉयज एसोसिएशन के कार्यकारिणी सदस्य, सदस्य भूतपूर्व छात्र, विभिन्न प्रवृत्तियों के अधिष्ठाता, संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन स्थापना दिवस वर्चुअल कार्यक्रम

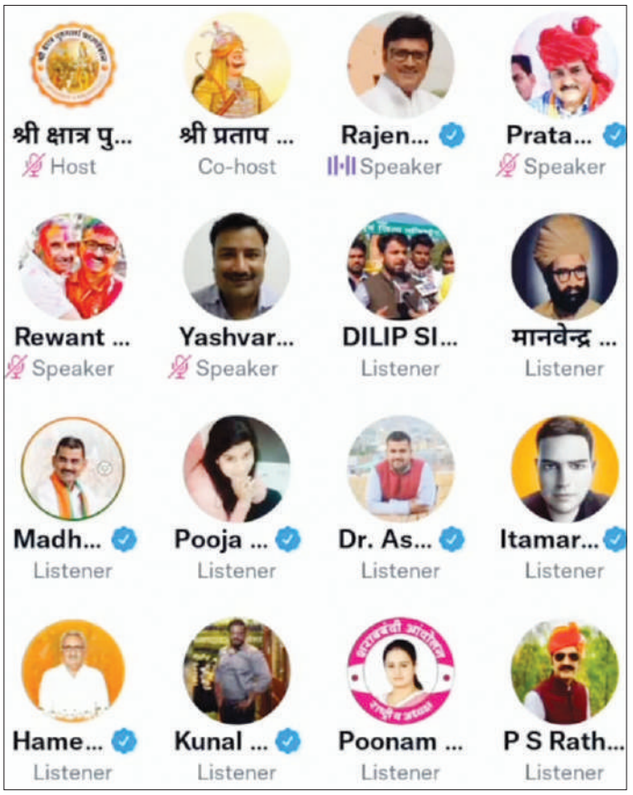

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का चतुर्थ स्थापना दिवस 12 जनवरी 2022 को ट्विटर स्पेस पर वर्चुअल माध्यम से मनाया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी (आनुषंगिक संगठन) रेवन्त सिंह पाटोदा ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की अब तक की यात्रा का वर्णन करते हुए कहा कि इन 3 वर्षों में फाउंडेशन ने सामाजिक हित के विभिन्न कार्यों को हाथ में लिया और उन कार्यों में अपेक्षित सफलता भी प्राप्त हुई। समाज का व्यापक सहयोग भी प्राप्त हुआ और सकारात्मकता का प्रसार भी हुआ। इस छोटी सी अवधि में भी श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन ने जो काम किया है वह वास्तव में उसकी नहीं बल्कि श्री क्षत्रिय युवक संघ की ही शक्ति है जो इसके पीछे कार्य कर रही है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केंद्रीय कार्यसमिति के सदस्य यशवर्धन सिंह झेरली ने फाउंडेशन के उद्देश्य व उसे प्राप्त करने के लिए अपनाए जाने वाले साधनों व माध्यमों की जानकारी देते हुए फाउंडेशन द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अब तक किए हुए कार्यों के संबंध में जानकारी दी और कहा कि जिस प्रकार स्वामी विवेकानंद के माध्यम से स्वामी रामकृष्ण परमहंस का ज्ञान व शक्ति प्रकट हुई उसी प्रकार श्री क्षत्रिय युवक संघ का आशीर्वाद श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के माध्यम से प्रकट हो रहा है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राजस्थान विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि इस छोटी सी अवधि में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन ने समाज हित में जिस प्रकार से कार्य किए हैं वह वास्तव में प्रशंसनीय है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मार्गदर्शन में सकारात्मकता के साथ कार्य करते हुए फाउंडेशन द्वारा समाज के युवाओं को विभिन्न माध्यमों से सकारात्मक मार्गदर्शन प्रदान किया जा रहा है जो समाज में बदलाव ला रहा है। राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने कहा कि हम सभी अलग-अलग राजनैतिक विचारधाराओं से, अलग-अलग पृष्ठभूमि से, अलग-अलग परिस्थितियों में हो सकते हैं लेकिन समाज के प्रति हम सभी का भाव एक है और हम सभी को एकजुट होकर समाज के लिए कार्य करना है। सभी प्रकार के मतभेदों को दूर करके एकता का संदेश सबको देना है। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित श्रोताओं द्वारा कुछ जिज्ञासाएं भी रखी गई जिनका समाधान केंद्रीय कार्यकारी ने किया। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों पर कोविड संबंधी निदेशों की अनुपालना करते हुए भौतिक रूप से भी स्थापना दिवस के उपलक्ष में कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनके विस्तृत समाचार अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org